

## 100<sup>th</sup> Birth Anniversary of Acharya Vidyanand

Acharya Vidyanand's original name was Surendra Upadhyay. He was born on 22 April 1925 in the house of Kalappa Upadhyay, a senior Muni Acharya of the Jain sect: a prominent thinker, philosopher, writer, musician, editor, and patron.

Acharya Vidyanand's personality was extraordinary from the very beginning. Helping those younger than him, caring for the sick, and comforting the downtrodden always appealed to him. The internal conflict in his mind kept reminding him to move towards a greater goal. His early experiences in life made him understand the true meaning of human service.

His desire to move towards his real goal was unwavering. His inclination towards religion and asceticism was visible from childhood. He reached Pune in search of a livelihood. There, he got a job in a factory manufacturing military equipment. After a few days, he got a job in a biscuit factory. But he did not like worldly activities, and his mind was constantly immersed in spiritual thoughts.

In 1942, when the Quit India Movement was launched across the country, He too could not remain untouched by its call. The feeling of patriotism and social service was present in him from the very beginning. His experiences of the world, which were mostly bitter, turned him towards detachment from worldly life. In 1946, a wonderful coincidence occurred. Acharya Mahavirkirti performed Varshayoga in Shedwal. He used to listen to Munishri's discourses every day and get immersed in the soul's bliss. This revolutionary youth, dressed in modern attire, made simplicity his way of life. It was natural for Acharya Mahavirkirti to pay attention to this youth who came regularly for Gyan Sadhna. He used to talk to him very lovingly and was

pleased to hear his thoughts. One day, in the course of a conversation, Surendra expressed his desire to take Muni Diksha in front of Munishri.

Acharya Vidyanand received Kshullak Diksha on 15 April 1946 at Tamdaddi in Karnataka, under the guidance of Acharya Mahavirkirti. After this, he practised rigorous penance, self-study, and service. There was a strong spiritual attraction in his personality, which influenced countless devotees.

Under the guidance of Acharya Deshbhushan, he received initiation on 25 July 1963 at Subhash Maidan in Delhi. With this initiation, he fully entered the life of a monk. Finally, Acharya Ratna Sagar gave him Upadhyay initiation on 17 November 1974 in Delhi, which established him as a prominent figure in the religious community. After this initiation, he began to be called 'Maharaj'.

The impact of his spiritual journey was not limited to the religious field. He was also active in various fields such as writing, editing, philosophy, and music. He produced many texts in which Jainism and philosophy have been explained in detail. He played an important role in inspiring youth and seekers. Acharya Vidyanand ascended to heaven on 18 February 2024.

The Department of Posts is proud to release a commemorative postage stamp in honour of Acharya Vidyanand, a tribute to a spiritual luminary whose life was devoted to the service of humanity and the pursuit of higher truth.

### Credits:

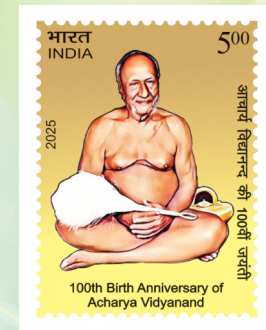
Stamp/FDC/Brochure/ : Sh. Brahm Prakash

Cancellation Cachet

Text : Based on information provided by the proponent.



डाक विभाग  
Department of Posts



आचार्य विद्यानन्द की 100वीं जयंती  
100th Birth Anniversary of Acharya Vidyanand

विवरणिका BROCHURE

## आचार्य विद्यानन्द की 100वीं जयंती

आचार्य विद्यानन्द का जन्म 22 अप्रैल 1925 को हुआ। उनके पिता आचार्य कलप्पा उपाध्याय जैन संप्रदाय के प्रतिष्ठित मुनि, प्रख्यात विचारक, दार्शनिक, लेखक, संगीतज्ञ, संपादक और संरक्षक थे। विद्यानन्द का मूल नाम सुरेन्द्र उपाध्याय था।

आचार्य विद्यानन्द प्रारम्भ से ही असाधारण मनीषी थे। उनका मन हमेशा से ही अपने छोटों का सहयोग करने, रोगियों की सेवा-सुश्रुषा करने और दीन-दुखियों का सुख-दुख बांटने में लगता था। उनका मानसिक द्वंद्व उन्हें उनके सदैव वृहत उद्देश्य की ओर अग्रसर रहने के लिए प्रेरित करता रहा। उनके जीवन के प्रारंभिक अनुभवों ने उन्हें मानव सेवा का सच्चा अर्थ समझने में मदद की।

वे अदम्य इच्छाशक्ति के धनी थे। वे निरंतर अपने वास्तविक उद्देश्य की ओर अग्रसर रहे। धर्म और वैराग्य के प्रति उनका झुकाव बचपन से ही परिलक्षित होने लगा था। युवा अवस्था में, आजीविका की तलाश में जब वे पुणे पहुँचे तो उन्हें वहाँ सैन्य उपकरण बनाने वाली एक फैक्ट्री में नौकरी मिल गई। परंतु कुछ ही दिन में वे इस नौकरी को छोड़ कर बिस्किट फैक्ट्री में काम करने लगे। किन्तु सच तो यह था कि उनका मन लौकिक क्रिया-कलापों में कदापि नहीं लगता था; बल्कि वे सदैव आध्यात्मिक विचारों में निमग्न रहते थे।

सन् 1942 में जब समस्त देश में 'भारत छोड़ो आन्दोलन' का नारा गूँज रहा था, तो वे भी इस पुकार से अछूते न रह सके। देशभक्ति और समाज सेवा की यह भावना उनमें बचपन से ही विद्यमान थी। साथ ही जीवन के कड़वे अनुभवों ने उन्हें वैराग्य की तरफ मोड़ दिया। सन् 1946 में एक अद्भुत संयोग हुआ। जैन संप्रदाय के प्रतिष्ठित महामुनि, आचार्य महावीरकीर्ति ने शेडवाल में वर्षायोग कार्यक्रम का पुण्य आयोजन किया। वे प्रतिदिन उनके प्रवचन सुनते और आत्मिक आनन्द में सराबोर हो जाते। आधुनिक वेश-भूषा धारण करने वाले इस नवयुवक ने उनके प्रवचनों से प्रभावित होकर सादगीपूर्ण जीवन-पद्धति अपना ली। ज्ञान साधना के लिए नियमित रूप से उपस्थित रहने वाले

इस युवा पर आचार्य महावीरकीर्ति का ध्यान जाना स्वाभाविक ही था। वे उनसे आत्मीयता से संवाद करते और उनके विचार सुनकर प्रसन्न होते। एक दिन वार्तालाप के दौरान युवा सुरेन्द्र ने मुनिश्री के समक्ष मुनि दीक्षा ग्रहण करने की इच्छा प्रकट की।

15 अप्रैल 1946 को सुरेन्द्र ने कर्नाटक के तामदडी में आचार्य महावीरकीर्ति महाराज के मार्गदर्शन में क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण की और कालांतर में वे आचार्य विद्यानन्द कहलाये। दीक्षा ग्रहण करने के उपरांत विद्यानन्द ने कठोर तप, स्वाध्याय और सेवा साधना की। उनके व्यक्तित्व में प्रबल आध्यात्मिक आकर्षण था। उनके इस चुम्बकीय व्यक्तित्व ने असंख्य अनुयायियों को उनकी ओर आकर्षित किया।

25 जुलाई 1963 को विद्यानन्द ने दिल्ली के सुभाष मैदान में आचार्य देशभूषण महाराज के मार्गदर्शन में दीक्षा ली और पूर्ण रूप से मुनि जीवन में प्रवेश कर गए। तदोपरांत, 17 नवंबर 1974 को दिल्ली में आचार्य रत्न सागर जी ने उन्हें उपाध्याय की दीक्षा प्रदान की। उपाध्याय दीक्षा ने उन्हें 'धार्मिक समुदाय' में प्रतिष्ठित व्यक्तित्व के रूप में स्थापित कर दिया और वे 'महाराज' कहलाने लगे।

आचार्य विद्यानन्द की आध्यात्मिक यात्रा केवल धार्मिक क्षेत्र तक ही सीमित नहीं थी; बल्कि वे लेखन, संपादन, दर्शन और संगीत जैसे विभिन्न क्षेत्रों में भी सक्रिय रहे। उन्होंने कई ग्रंथों की रचना की जिनमें जैन धर्म और दर्शन की विस्तृत व्याख्या की गई है। उन्होंने युवाओं एवं साधकों को प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। 18 फरवरी 2024 को आचार्य विद्यानन्द स्वर्ग सिधार गए।

डाक विभाग, मानवता की सेवा और आध्यात्मिक खोज में अपना जीवन समर्पित कर देने वाले आचार्य विद्यानन्द के सम्मान में स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए गर्व का अनुभव करता है।

### आभार:

डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/ : श्री ब्रह्म प्रकाश

विवरणिका/विरूपण कैंशे

पाठ

: प्रस्तावक द्वारा प्रदत्त सामग्री से संदर्भित।

## तकनीकी आंकड़े

### TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	: 500 पैसे
Denomination	: 500p
मुद्रितडाक-टिकटें	: 202800
Stamps Printed	: 202800
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at [http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY\\_3D.html](http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html)

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास हैं।

©Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00